केन्द्रीय भाव

जीवन-तत्व व्यापक और असीमित है। विचार और भाव के दो किनारों के बीच प्रवाहित होने वाली जीवन-धारा का अपना एक लक्ष्य और अपनी एक गतिशीलता भी होती है। विचार जीवन-व्यवहार को गतिशील और मूल्य बोधी बनाता है। विचार जीवन की चेतना को निरंतर विकसित करने में सहयोग करता है। जीवन में संवेदना का विस्तार करता है और मूल्यों की सर्जना का उत्स भी यही होता है। जीवन-दर्शन में विचार और भाव की चेतना तो है ही जीवन-दर्शन जीवन के बाह्य और आंतरिक जगत को समाज सापेक्ष भूमिका में प्रतिष्ठित भी करता है। काव्य में भाव और विचार का समाहार जीवन-दर्शन की मूल्य चेतना के रूप में ही प्रस्तुत होता है। काव्य में मानवीय चेतना के विकसित संदर्भ ही जीवन-दर्शन को व्यक्त करते हैं। परिवार, समाज और सृष्टि के साथ मनुष्य सामंजस्य तथा मानवीय-बोध की उच्चता को प्राप्त करने का लक्ष्य काव्य के उदार दृष्टि पथ में सदैव महत्वपूर्ण रहा है हिन्दी काव्य में इस लक्ष्य को प्राप्त करने की सदैव चेष्टा की गई है। प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य रचनाओं में सदैव जीवन-निर्माण के तत्वों को समाहित किया गया है।

आधुनिक हिन्दी काव्य में छायावाद के अंतर्गत रचे गए काव्य में जीवन के बाह्य और आंतरिक पक्षों का समावेश है, महादेवी वर्मा के काव्य में जहाँ गहन आध्यात्मिक अनुभूतियाँ हैं वहाँ जीवन-निर्माण की दिशा के अनुसंधान की भी कविताएँ उन्होंने लिखी हैं। प्रस्तुत कविता जीवन में उत्साह को संचारित करने वाली शक्तियों से परिपूर्ण है। भले ही जीवन में संघर्षों का सिलसिला चल रहा हो किंतु इस नाशवान संसार में अपनी पहचान छोड़ जाना ही लक्ष्य होना चाहिए । इस पहचान को स्थापित करने के लिए यद्यपि बहुत सारे ऐसे आकर्षण त्यागने पड़ेंगे जो जीवन को बाँधकर सीमित कर देते हैं। इसीलिए अपने व्यक्तित्व को विस्तार देना जरूरी है और यह विस्तार तभी संभव है जब व्यक्ति को समाज में समर्पित किया जाएगा।

दूसरी कविता अज्ञेय द्वारा रचित है। अज्ञेय जीवन की व्यापकता के आधुनिक कवि हैं। उनके काव्य में जीवन के अनेक रंग उपलब्ध होते हैं, उन्होंने प्रस्तुत कविता में स्पष्ट किया है कि यद्यपि जीवन मरणशील है इसमें पराजय भी है, इसमें गति को कुंठित करने वाले अनेक व्यवधान भी हैं, किंतु इन्हीं सबके बीच ही जीवन की प्रखरता विकसित होती है। संसार एक यज्ञ वेदिका जैसा है - स्वाहा बनकर ही जीवन को निखारा जा सकता है। तप करके ही जीवन में ललकार बनने की चेतना आती है। त्याग और तपस्या को महत्व प्रदान करते हुए कवि ने अनेक प्रतीकों को इस कविता में पिरोया है।

चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले,
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया,
जाग या विद्युत-शिखाओं में निठुर तूफान बोले,

पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले ?
पन्थ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले ?

विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना।

- महादेवी वर्मा

मैंने आहुति बनकर देखा

मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ - मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे, क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने -
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने!
अपने जीवन को रस देकर जिसको यत्नों से पाला है -
क्या वह केवल अवसाद-मलिन झरते आँसू की माला है ?
वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव-रस का कटु प्याला है-
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहन-कारी हाला है।
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया-
मैंने आहुति बनकर देखा यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है!
मैं कहता हूँ, मैं बढ़ता हूँ, नभ की चोटी चढ़ता हूँ,
कुचला जाकर भी धूली-सा आँधी और उमड़ता हूँ,
मेरी जीवन ललकार बने, असफलता ही असि-धार बने
इस निर्मम रण में पग-पग का रुकना ही मेरा वार बने!
भव सारा तुझको है स्वाहा सब कुछ तप कर अंगार बने-
तेरी पुकार-सा दुर्निवार मेरा यह नीरव प्यार बने।

- अज्ञेय

(पूर्वा से)

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि नाश पथ पर कौन-से चिह्न छोड़ जाना चाहता है ?
2. मधुप की मधुर गुनगुन विश्व पर क्या प्रभाव डालेगी ?
3. तितलियों के रंग से कवि का क्या तात्पर्य है ?
4. कवि के अनुसार काँटे की मर्यादा क्या है ?
5. कवि ने 'मुर्दे होंगे' किसे कहा है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि की आँखे उनींदी क्यों हैं ?
2. ''मोम के बन्धन सजीले'' से कवि का क्या आशय है।
3. 'चिर सजग' का क्या आशय है।
4. कवि ने अन्तिम रहस्य के रूप में क्या पहचान लिया ?
5. कुचला जाकर भी कवि किस रूप में उभरता है ?
6. 'निर्मम रण में पग-पग पर रुकना' किस प्रकार प्रतिफलित होता है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'जाग तुझको दूर जाना' से कवि का क्या आशय है।
2. 'पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के रंग रंगीले' में निहित भाव स्पष्ट कीजिए।
3. 'तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना' द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है ?
4. 'मैंने आहूति बनकर देखा' कविता का मूल भाव लिखिए।
5. प्रस्तुत कविताओं से हमें क्या सीख मिलती है।
6. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए -

(क) मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ, वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?

(ख) विश्व का क्रन्दन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल के दल ओस-गीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना।

ध्यान दीजिए -

हास्य रस – **''इस दौड़ धूप में क्या रखा आराम करो, आराम करो।**
आराम जिंदगी की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है।
आराम शब्द में राम छिपा, जो भव-बंधन को खोता है।
आराम शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।''

स्थायी भाव – हास्य
आलंबन – व्यंग्य का पात्र अर्थात् व्यक्ति
उद्दीपन – व्यंग्योक्तियाँ
अनुभाव – खिलखिलाना
संचारीभाव – हर्ष, चपलता, निर्लज्जता

हास्य रस – सहृदय के हृदय में स्थित हास्य नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तो वह हास्य रस कहलाता है।

प्रश्न 1. हास्य रस की परिभाषा देते हुए किसी अन्य उदाहरण द्वारा समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. महादेवी वर्मा के गीत के अनुरूप ही दो अन्य कवियों की कविताएँ संकलित कीजिए।
2. आपने अपने जीवन का लक्ष्य क्या बनाया है? कक्षा में चर्चा करें।
3. हमारे धार्मिक ग्रंथ हमें जीवन की प्रेरणा प्रदान करते हैं, शिक्षक की सहायता से किसी एक धार्मिक ग्रन्थ के जीवन मूल्यों को सूचीबद्ध करिए।

शब्दार्थ

चिर = पुराना। **व्यस्त** = कार्य में लगा हुआ। **अचल** = पर्वत। **हिमगिरि** = हिमालय, बर्फ का पर्वत। **कम्प** = थरथराना। **अलसित** = आलस्य से भरा हुआ। **आलोक** = प्रकाश। **तिमिर** = अंधकार। **निठुर** = निष्ठुर, कड़े स्वभाव वाला। **क्रन्दन** = पीड़ा से मुक्त, रुदन। **मधुप** = भौंरा। **कारा** = कारागार, जेलखाना।

दुर्धर = कठिनाईयों को पार करने मे सामर्थ्य। **मरु** = मरुस्थल। **प्रासाद** = भवन। **प्रशस्त** = श्रेष, उत्तम। **हाला** = मदिरा, शराब। **असिधार** = तलवार की धार। **वार** = प्रहार, वार करना। **भव** = संसार। **दुर्निवार** = कठिन जिसका निवारण करना कठिन हो।

विविधा

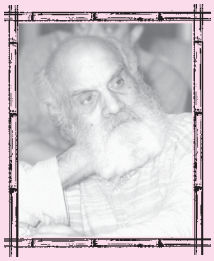

कवि परिचय – आधुनिक हिन्दी के वरिष्ठतम कवियों में से एक त्रिलोचन का जन्म 20 अगस्त सन् 1917 को चिरानीपट्टी – कटघरापट्टी, जिला सुल्तानपुर, उत्तरप्रदेश में हुआ था।

त्रिलोचन आजीविका हेतु अनेक वर्षों तक अध्यापन कार्य तथा पत्रकारिता से जुड़े रहे। गणेशराय नेशनल इण्टर कॉलेज, जौनपुर में आप अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। आपने विदेशी छात्रों को हिन्दी, उर्दू और संस्कृत की शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में द्वैभाषिक कोश (उर्दू-हिंदी) परियोजना में भी आपने कुछ वर्षों तक कार्य किया।

'धरती', 'गुलाब और बुलबुल', 'दिगन्त', 'ताप के ताये हुए दिन', 'शब्द', 'उस जनपद का कवि हूँ', 'अरधान' तथा 'तुम्हें सौंपता हूँ' आदि आपकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ हैं।

मध्यप्रदेश के सागर विश्वविद्यालय परिसर में स्थित मुक्तिबोध सृजनपीठ के आप अध्यक्ष भी रहे हैं। 'ताप के ताये हुए दिन' कविता-संग्रह के लिए आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

त्रिलोचन जी का निधन 09 दिसम्बर सन् 2007 को हुआ।

केन्द्रीय भाव

मानव जीवन की परिपूरकता संपूर्ण सृष्टि के सानिध्य में है। मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे की पूरकता के माध्यम से ही संसार के सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर सकते हैं। कलाएँ संसार के इसी सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करती हैं। कलाओं के भीतर मनुष्य और मनुष्येतर सृष्टि का अंतर्संवाद सदैव चलता रहता है। कविता में यह संवाद मानवीय अनुभूतियों और विचारों के विस्तार में प्राप्त होता है। इसलिए कविता मनुष्य और प्रकृति के विस्तार को व्यक्त करने में समर्थ होती है। मनुष्य की बहुआयामी दृष्टियों, मन्तव्यों और भावनाओं का समन्वय काव्य में प्रकृति के सान्निध्य में अपनी छटा बिखेरता है। मानवीय व्यवहार के अनेक रंग कविता में उपस्थित होते हैं। विविधा में यही रंग अपनी उजास व्यक्त कर रहे हैं। विविध विषयों का समन्वय विविधा को अनेक संदर्भों से परिपूर्ण करता है। जीवनगत अनेक सच्चाइयों को हम विविधा के दर्पण में झाँक सकते हैं। हिन्दी काव्य का विस्तृत इतिहास यह स्पष्ट करता है कि कविता मानव जीवन के समान ही सदैव गतिशील रही है। वह मानवीय इतिहास को निरंतर अपने भीतर समेटती रही है। इसलिए मनुष्य की चेतना और मनुष्य के व्यवहारों को कविता ने काव्य इतिहास के प्रत्येक युग में अभिव्यक्त किया है। आधुनिक काव्य में हम मनुष्य के बहुविधि जीवन-संदर्भों को काव्य के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

आधुनिक युग में त्रिलोचन शास्त्री अपनी कथनशैली और अपनी लोकदृष्टि के कारण कविता को एक नई भंगिमा प्रदान करने वाले रहे हैं । प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति के रम्य वर्णन के साथ-साथ मानवीय जीवन की अनुभूतियों का भी सशक्त चित्रण किया है। यह वर्णन गंगा के किनारों पर फैली शरदकालीन चाँदनी को व्यक्त करता है। इसमें प्रकृति के बदलते सूक्ष्म प्रभावों का चित्रण दिन और रात के अनुरूप किया गया है, ठंड थोड़ी सी बढ़ रही है, बादल हैं और थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही है, शरद कालीन बादलों के बहुवर्णी वैभव का दृश्यांकन कवि ने कुशलता के साथ किया है। प्रकृति के आँगन में चल रहे सृजन के संकल्प को भी कविता में व्यक्त किया गया है। यह सृजन जो सहयोग के माध्यम से संपन्न है, खेतों में हरियाली बनकर लहरा रहा है। इस सृजन से धरती माता

संपन्न हुई हैं। हवा इन खेतों को लहरा रही है। हवा के वर्णन में कवि ने मानवीय व्यवहार को व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है कि हवा का झोंका कुछ इस तरह से आ रहा है जैसे छोटा देवर हठ कर अपनी भाभी का आँचल खींच रहा हो। प्रेम और वात्सल्य की सफल अनुभूति का यह चित्रण कवि की सूक्ष्म काव्य दृष्टि से परिचित कराता है।

हिन्दी का वैभव संपूर्ण संसार में फैला हुआ है। अभिमन्यु अनंत प्रवासी कवि हैं। वे मारीशस में निवास करते हैं। उनकी इन कविताओं में हम अपने समय की प्रमुख चिंताओं से परिचित हो रहे हैं। हमारी जो परंपराएँ थी, वे टूट रही हैं। उनके स्थान पर हम जिस नवीन भावबोध को स्वीकार कर रहे हैं उस पर पुनर्विचार की जरूरत है। 'नई सभ्यता' कविता में कवि का भाव यही है। 'तृप्ति' कविता में मानवीय श्रम के शोषण की चर्चा की गई है। खेत में फसल मजदूर (किसान) उगाता है, किंतु उगाई गई फसल से प्राप्त दौलत किसी अन्य की तिजोरी में चली जाती है - यह हमारे समय की विडंबना है। गरीबी का चित्रण करती कविता 'खाली पेट' नियति पर व्यंग्य है। छोटी होते हुए भी इन कविताओं में तीखापन है। सहज अभिव्यक्ति अपनी कथन भंगिमा के कारण ये कविताएँ संप्रेषणीय हैं।

चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है

(1)
चल रही हवा
धीरे-धीरे
सीरी-सीरी;
उड़ रहे गगन में
झीने-झीने
कजरारे
चंचल
बादल!
छिपते दिपते
जब तब
तारे
उज्ज्वल, झलमल
चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है

(2)
ऋतु शरद और
नवमी तिथि है
है कितनी, कितनी मधुर रात
मन में बस जाती शीतलता
है अभी नहीं जाड़ा कोई
बस ज़रा ज़रा रोएँ काँपे
तन-मन- में भर आया उछाह
हाँ, दिन भी आज अजीब रहा-

रिमझिम रिमझिम पानी बरसा
फिर खुला गगन
हो गयी धूप
दिन भर ऐसा ही रहा तार
कपसीले, ऊदे, लाल और
पीले, मटमैले – दल के दल
आये बादल
अब रात
न उतना रंग रहा
काला – हलका या गहरा
या धुएँ–सा
कुछ उजला उजला
किसके अतृप्त दृग देखेंगे
चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है।

(3)
कुछ सुनती हो,
कुछ गुनती हो,
यह पवन, आज यों बार–बार
खींचता तुम्हारा आँचल है
जैसे जब तब छोटा देवर
तुम से हठ करता है जैसे
तुम चलो जिधर वे हरे खेत
वे हरे खेत–
हैं याद तुम्हें ? –
मैंने जोता तुमने बोया
धीरे–धीरे अंकुर आये
फिर और बढ़े
हमने तुमने मिल कर सींचा
फैली मनमोहन हरियाली
धरती माता का रूप सजा
उन परम सलोने पौधों को
हम दोनों ने मिल बड़ा किया
जिनको नहलाते हैं बादल
जिनको बहलाती है बयार
वे हरे खेत कैसे होंगे
कैसा होगा इस समय ढंग
होंगे सचेत या सोये से
वे हरे खेत
चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है।

– त्रिलोचन

कुछ कविताएँ

(1) नयी सभ्यता

कल हमारी कुटियों में बिन पूछे
तूफ़ान दाखिल हो जाते थे
आज हमारे घरों में बिन दरवाज़े खटखटाये
जो चले आ रहे हैं
उनसे हमारी दीवारें और छतें नहीं
हमारी बुनियाद चरमरा रही है।

(2) तृप्ति

माथे की श्रम बूँदो को
खेत में पहुँचाकर मजदूर ने बो दिया।
लहलहाती फ़सल जब तैयार हुई
उन हरे-भरे दानों को किसी और ने
तिजोरी के लिए बटोर लिया
इसीलिए आक्रोश में आकर
मजदूर सूरज को निगल गया।

(3) ख़ाली पेट

तुमने आदमी को ख़ाली पेट दिया
ठीक किया।
पर एक प्रश्न है रे नियति !
खाली पेट वालों को
तुमने घुटने क्यों दिए ?
फैलने वाला हाथ क्यों दिया ?

- अभिमन्यु अनंत
(अप्रवासी भारतीय)

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. आसमान में किस तरह के बादल उड़ रहे थे ?
2. रिमझिम - रिमझिम पानी बरसने के बाद क्या हुआ ?
3. कवि के अनुसार हवा बार-बार क्या कर रही है ?
4. कवि ने नई सभ्यता का स्वरूप कैसा बतलाया है ?
5. आक्रोश में आकर मजदूरों ने क्या किया ?
6. 'खाली पेट' से कवि का क्या आशय है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. बादलों के हटने पर तारे कैसे दिखलाई पड़ते हैं ?
2. कवि के अनुसार सम्पूर्ण दिन में किस तरह के बादल दिखलाई पड़ रहे थे ?
3. कवि ने हरे खेतों के बारे में क्या कल्पना की है ?
4. कवि के अनुसार मेहनत से कमाई हुई फसल का वास्तविक लाभ किसे प्राप्त होता है?
5. कवि नियति से क्या प्रश्न करते हैं ?
6. 'बुनियाद चरमराने' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'त्रिलोचन' की कविता में प्रस्तुत शरद-ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।
2. पठित पाठ के आधार पर 'त्रिलोचन' की कविता के कलापक्ष पर अपना मन्तव्य दीजिए।
3. त्रिलोचन शास्त्री ने पवन के माध्यम से क्या संकेत किया है, भाव व्यञ्जना कीजिए।
4. नई और पुरानी सभ्यता में कवि ने क्या अंतर बतलाया है?
5. 'खाली पेट' कविता में निहित व्यंग्य को समझाइए।
6. तृप्ति कविता के माध्यम से कवि ने किस विसंगति को उजागर किया है?
7. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) ''हाँ दिन भी अजीब रहा ..... आए बादल ।''

(ख) ''यह पवन आज यों .....जिधर वे हरे खेत।''

(ग) ''कल हमारी कुटियों .....चरमरा रही है।''

काव्य सौंदर्य

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

अ) ''इसलिए आक्रोश में आकर, मजदूर सूरज को निगल गया'' में निहित अलंकार को पहचान कर उसके लक्षण लिखिए।

ब) ''माथे की श्रम बूँदों को खेत में पहुँचाकर बो दिया'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

2. ''खाली पेट वालों को तुमने घुटने क्यों दिए ? फैलाने वाले हाथ क्यों दिए? इन पंक्तियों के प्रश्नों का भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

ध्यान दीजिए -

भयानक रस - **''नभ ते झपटत बाज लखि, भूल्यो सकल प्रपंच।**
कंपित तन व्याकुल नयन, लावक हिल्यो न रंच ॥''

आकाश से झपटते हुए बाज को देखकर बेचारा लावा पक्षी सुध-बुध खो बैठा। उसका शरीर काँपने लगा और नेत्रों की ज्योति मंद पड़ गई।

स्थायी भाव	-	भय
आश्रय	-	लावा पक्षी
आलंबन	-	बाज
उद्दीपन विभाव	-	बाज का झपटना
अनुभाव	-	शरीर का काँपना, नेत्रों की व्याकुलता
संचारीभाव	-	दैन्य, विषाद

भयानक रस - सहृदय के हृदय में स्थित 'भय' नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब 'भयानक रस' की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न - 'भयानक रस' का कोई अन्य उदाहरण लिखिए।

और भी समझिए -

वीभत्स रस - **''कोउ अँतडिनि की पहिरि माल इतरात दिखावत।**
कोउ चरबी लै लोप सहित निज अंगनि लावत ॥
कोउ मुंडनि लै मानि मोद कुंदुक लौ डारत।
कोउ रुंडनि पै बैठि करेजौ फारि निकारत॥''

यहाँ किसी की मृत देह का वर्णन किया गया है, जिसमें कोई अँतड़ी की माला पहनकर इतरा रहा है, कोई चरबी लिए है, कोई सिर से खेल रहा है, तो कोई कलेजा निकाल रहा है। वर्णन को पढ़ कर घृणा का भाव उत्पन्न होता है। अत: इसमें -

स्थायी भाव	-	जुगुप्सा, घृणा
आलंबन	-	मृत देह का वर्णन
उद्दीपन विभाव	-	अंतडी की माला पहनकर इतराना, शरीर पर पोतना, नर मुंडों को गेंद की तरह उछालना आदि।

वीभत्स रस - सहृदय के हृदय में स्थित : जुगुप्सा (घृणा) नामक स्थायी भाव का जब विभाव अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वीभत्स रस की निष्पत्ति होती है।

यह भी जानें -

अद्भुत रस - **''अखिल भुवन चर-अचर सब हरि-मुख में लखि मातु।**
चकित भई गद्गद् बचन विकसित दृग पुलकातु॥''

भगवान कृष्ण के मुख में सारे भुवनों का दर्शन कर यशोदा आश्चर्यचकित हो गईं।

स्थायी भाव	-	विस्मय
आलंबन	-	श्रीकृष्ण का मुख
उद्दीपन विभाव	-	मुख में भुवनों का दिखना
अनुभाव	-	नेत्र विकास, गद्गद् स्वर
संचारी भाव	-	त्रास, दैन्य

अद्भुत रस - सहृदय के हृदय में स्थित 'विस्मय' नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है वहाँ अद्भुत रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न 1. वीभत्स रस और भयानक रस में अंतर बताइए।

प्रश्न 2. अद्भुत रस की परिभाषा एवं उदाहरण, रस के विभिन्न अंगों सहित दीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. नई सभ्यता के नाम पर टी.व्ही. जैसे उपकरणों का भारतीय संस्कृति पर दुष्प्रभाव पर अपने विचार दस वाक्यों में व्यक्त कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि आप भारत से बाहर रह रहे हैं, 'भारत की मीठी यादें' शीर्षक पर 150 शब्दों में लेख लिखिए।
3. 'मैं मजदूर हूँ' निबंध खोजकर पढ़िए।
4. श्रम से जुड़े लोगों की परेशानियों से परिचित हों और उसे सूचीबद्ध करिए।
5. समाज में सम्पन्न और विपन्न लोगों के बीच अंतर के कारणों पर दस वाक्य लिखिए।

शब्दार्थ

सीरी=सीरी - धीरे धीरे। **झीने-झीने** = पतले-पतले (पारदर्शक)। **दिपते** = दिखाई देते। **उछाह** = उत्साह। **अजीव** = विचित्र। **दृग** = नेत्र। **सलोने** = सुन्दर। **दाखिल** = प्रवेश। **बुनियाद** = नींव, आधार, मूल। **आक्रोश** = क्रोध। **नियति** = प्रकृति। **तृप्ति** = संतुष्टि।